राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में आर्थिक जीवन मूल्य

सुमन कुमारी
शोधार्थी, टांटिया विश्वविधालय,
श्रीगंगानगर

डॉ. दशरथ माचरा
Research Supervisor Tantia University
dmpallu@gmail.com

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में एक सामान्य व्यक्ति का जीवन से संघर्षरत दृश्य नजर आता हैं अपने जीवन को जीने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को भौतिक चीजों की आवश्यकता पड़ती हैं , लेकिन भौतिक चीजों को बिना पैसे से प्राप्त नहीं किया जा सकता है और पैसे के बिना परिश्रम के प्राप्त नहीं कर सकते । राजेन्द्र यादव के उपन्यास " उखड़े हुए लोग " में शब्द जीविकोपार्जन के लिए ही स्वदेश महल में प्रवेश करता है । सूरज भी देशबन्धु के सामने नौकरी के लिए ही अपने उग्र व्यक्तित्व को दबाये रखता है । मिल - मजदूरों के सामने तो आर्थिक प्रश्न विकट रूप में मौजूद था । अनेक मजदूरों की मृत्यु होने पर भी तो कुछ नहीं कर पाया । आर्थिक गिरावट के काले बादल इंसान को निराशावादी बना डालते हैं गंदे , फटे , काले कपड़े पहने हुए मजदूर अपनी मजबूरी का मजाक उड़ते हुए देख रहे थे। कोई कह रहा था । " हमारी किस्मत में यही बढा है वही लिखा है । जिन्दारहोगे तो तुम्हारा खून मिलों में निचोड़ा जायेगा । तुम बॉयलरों में जल - जल कर मरोगें . और वैसे मरने से इंकार कर दोंगे तो नतीजा सामने है जब तक यह खद्दर के दूध के धुले चोगे पहने राक्षस तुम्हारी हमारी छातियों पर है । हमारी किस्मत यही है ।" उखड़े हुए लोग में मजदूरों की दयनीय स्थिति पूंजीपति वर्ग से सर्वहारा वर्ग का संघर्ष , उद्योगपतियों एवं मजदूरों में निरन्तर संघर्ष , नेताओं के विरुद्ध विद्रोह तथा उच्च वर्ग एवं मजदूर वर्ग का पारस्परिक विरोध को चित्रित किया है । दोहरी चालों को वहन करते हुए देशबन्धु , मजदूरों की लाचारी का तमाशा देखते हुए और आडम्बरयुक्त जीवन जीते है । उनके लिए मजदूर के जीवन की कोई कीमत नहीं है । रोजी रोटी के लिए मजदूर मिल मालिकों के सामने विवश दिखाई देते हैं । इन मजदूरों के सामने आर्थिक समस्याएं मुंह बाएं खड़ी रहती है । 'मंत्रविद्ध' में तारकदत्त अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अपने मित्रों से रूपए उधार मांगकर करता है । इसी प्रकार पिता की मृत्यु के बाद आर्थिक कमजोर होने के कारण , निन्नी को माँ के इलाज के लिए , छोटी बहन के पालन पोषण के लिए दिन रात नौकरी की चिन्ता सताती रहती है । एक इंच मुस्कान भी अमर आर्थिक संकटों के कारण , बिना किताब पूरी किये ही प्रकाशक से माह पूर्व ही रूपये ले लेता है और इसी एडवास के कारण प्रकाशक से आए दिन नवीन ठेस सहन करनी पड़ती है । 'शह और मात' में भी उदय को लाचारी वश वेतन लेकर निर्देशक व निर्माता के नाम से लिखना पड़ता हैं । आर्थिक तंगी के कारण उसे बम्बई में कुलीगिरी तक करनी पड़ती है । ' सारा आकाश ' उपन्यास में मध्यवर्गीय आर्थिक दुर्दशा युक्त परिवारिक स्थिति का वर्णन किया गया है ।

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मानव आर्थिक परिस्थितियों में उलझा हुआ सा नजर आता है । प्रत्येक उपन्यास में पात्र कहीं न कहीं अपनी आर्थिक स्थिति को लेकर संघर्षरत व चिन्तित सा प्रतीत होता है । राजेन्द्र यादव ने अपने उपन्यासों में अतिसूक्ष्मता से समाज को चित्रित किया हैं । इसी बात को स्पष्ट करते हुए डॉ . घनश्याम मधुप जी लिखते है कि " मध्यवर्गीय समाज में उच्चवर्ग की नकल करने की प्रवृत्ति की मानसिकता के कारण मानसिक तनाव उत्पन्न होने लगा है । यह वर्ग ठाठ - बाट से जीवन यापन करने की महत्वाकांक्षा करता रहा है । कुलटा में मध्यवर्गी समाज का खोखलापन औपचारिकताएँ और मुखौटे में छिपे चेहरों का चित्रण अत्यन्त सफलता से हुआ है । राजेन्द्र यादव ने अपने उपन्यासों के माध्यम से आर्थिक स्थिति से उलझ रहे लोगों की मानसिक स्थितियों को दर्शाया है । यादव का उपन्यास संसार मध्यवर्गीय परिवारों पर आधारित है । " राजेन्द्र यादव के प्रायः सभी उपन्यास मध्यवर्गीय परिवारों का सशक्त चित्र प्रस्तुत

www.aiirjournal.com ISSN 2349-638x

करते हैं । " सारा आकाश " ' मंत्रविद्ध ' ' अनदेखे अनजान पुल आदि के पात्र मध्यवर्ग से ही जुड़े है ।। कुलटा ' की मिसेज तेजपाल एक इंच मुस्कान की अमला शह और मात की अपर्णा क्रमशः उच्च मध्यवर्गीय जीवन से सम्बन्ध है ।

आधुनिक काल में समाज का भला बुरा चित्र अर्थ पर अवलंबित है । समाज में अर्थ को सबसे महत्वपूर्ण स्थान है । व्यक्ति हो या समाज दोनों के लिए आज अर्थ की भूमिका महत्वपूर्ण है । क्योंकि अर्थ के बिना किसी का भी विकास नहीं हो सकता । सरकार समाज का विकास अर्थ के आधार पर करती है । आर्थिक स्थिति के उतार चढाव के कारण सामाजिक जीवन में परिवर्तन होता है और उसमें असंतुलन निर्माण हो जाता है । उसमें समाज का ढांचा असंतुलित रहता है । समाज या व्यक्ति को मालूम है कि पैसों के बिना कुछ प्रगति नहीं हो सक्ती । इसी कारण अर्थ की प्राप्ति करने के लिए भोग , अनीति भ्रष्टाचार , अत्याचार , अनादर बढ़ते है । स्वार्थी प्रवृत्ति बढती है , स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण मानवीय मूल्य , नैतिक आदर्श आदि का ह्रास हो रहा है ।

आज के आधुनिक जीवन में परिव्याज जटिलताएँ आर्थिक है । व्यक्ति चारों और के आर्थिक दबावों , अनुभवों एवं विविध संगति विसंगतियों के बिच से यातनापूर्ण यात्रा तय कर रहा है । जब तक देश की गरीब जनता को पेटभर भोजन , तन ढकने को वस्त्र और रहने को मकान नहीं मिलता तब तक उनके जीवन में आशा और उल्लास का प्रश्न ही नहीं उठता ।

उपन्यासकार राजेन्द्र यादव स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते है । राजेन्द्र यादव ने अपने उपन्यासों में भी अर्थाभाव के कारण उत्पन्न होने वाली कई समस्याओं को उजागर किया है । राजेन्द्र यादव के पास युग परिवेश में समाज में उत्पन्न होने वा आर्थाभाव की समस्याओं को देखकर आंख मूढ कर चलनेवाले कलाकार नहीं थे । अतः उन्होंने अपने उपन्यासों में समाज के कई पात्रों को अर्थाभाव के कारण झूझते बताए है ।

आज के युग में हर एक व्यक्ति प्रकरेण पैसे कमाने पर तुले हुए है । यह सच है कि आधुनिक काल में पैसे के बिना कुछ भी नहीं मिलता है , ऐसा में क्या पैसा ही सबकुछ है ? जमाना ऐसा आ गया है कि पैसे के बिना व्यक्ति का कोई मूल्य ही नहीं रह गया है । जिसके पास पैसे है वह महान बन गया है । राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में चित्रित मध्यमवर्ग अर्थाभाव के कारण हिसाबेपन की जिंदगी जीने के लिए भी मजबूर है । विषम आर्थिक स्थिति में माता- पिता , कमानेवले बेटे और बेकार बेटे के लिए अलग- अलग मानदंड रखते है ।

" सारा आकाश " में बड़ा बेटा धीरज कमाता है । अतः उसके लिए घर में मान सम्मान है । इसकी पत्नी को नौकरानी की तरह सारा दिन काम करना पड़ता है । ऐसे में समर सोचता है , " अम्मा के पास साडी धोतीयां सब होगी । लेकिन नही वे तो उनकी प्यारी बहू के लिए है उनका पति कमाता जो है , तभी सारे दिन बच्ची को लेके घुमना और राज करना। घर भर को एक नौकरानी मिल गयी है सो जानवरों की तरह काम लिए जाओं । न उसके खाने की बात साचों , न पीने की । जब मन हो सो डांट फटकार लो बेचारे निकम्मे पति की पत्नी जो है ।

एक ही कोख से जन्म लेने पर भी माता पिता का रवैया कमाउ और निकम्मे बेटे के लिए दूहरे मानदंड को अपनाता है । अचानक एक दिन निकम्मा बेटा भी नौकरी करने लगता है तो माता पिता प्यार जताते है । बाद में नौकरी छूट जाने की बात सुनते है तो उसके साथ दूश्मनों की तरह बर्ताव करते है । बीस बाइस साल के बेटे पर बाबूजी हाथ उठाते है । इससे यही साबित होता है कि मध्यमवर्ग में पैसा ही सबकुछ है ।

घर में धन का अभाव हो तो आनेवाली संतान के लिए खर्च करने लायक पूर्व सिद्धता नहीं होती है । तब गर्भ गिरा देना अनिवार्य हो जाता है । एक इंच मुस्कान में अमर लेखन जीवी है । उसकी आर्थिक स्थिति उतनी अच्छी नहीं है कि वह परिवार को चला सके । रंजना कालेज में पढ़ती है घर का खर्च वही देख लेती है । ऐसे में समर रंजना से कहती है " अभी तो किसी भी तरह इस सबके लिए अपने को तैयार नहीं पा रहा हूं- न मानसिक रूप से न आर्थिक रूप से ।

'सारा आकाश' में गर्भ गिरानेवाला सन्निवेश तो नहीं है , मगर होनेवाली संतान के बारे में कुछ तैयारी करने की स्थिति में समर नहीं रहता है । अतः जब प्रभा सैयद बाबा की धूनी पोटली कमर में बांधकर , कपड़ो में इत्र लगाकर समर के पास आती है तो कारण जानने के बाद वह बहुत ही क्रोधित हो जाता है और कहता है- " बच्चा चाहिए ? खुद अपने खाने-पहनने का ठिकाना नहीं और टटूंगना अभी से लटका लो ।

धन का अभाव व्यक्ति की इमानदारी पर प्रश्न चिन्ह लगा देता है । साथ ही उसे गलत रास्ते पर जाने के लिए

मजबूर करता है । सारा आकाश का समर वैसे आदर्श युवक था । बड़े बड़े महापुरुषों के आदर्श उसके सामने थे । इतना होने पर जब उसे छोटी नोकरी मिलती है तो वह जगह के दूसरे छोर पर थी । रेल का सफर करना था । मगर रोज के सफर के लिए उसके पास पैसे नहीं थे । अतः अर्थाभाव समर को बिना टिकट के ही सफर करने के लिए मजबूर कर देता है ।

'उखड़े हुए लोग' का सूरज बिगुल के संपादक बनने के पहले गिरहकट से भी बना था । हवालात की हवा भी खायी थी । उसने एक बार शरद से जिक्र भी किया था - "एक बार पकडकर छः महिने को ढूंस दिए गये ।

अपने स्वाभीमान को बचाये रखने की प्रक्रिया मध्यवर्ग में अपेक्षाकृत ज्यादा दिखाई पड़ती है । ' एक इंच मुस्कान का अमर लेखन जीवी है । पैसे- पैसे के लिए तरसता रहता है । जहां वह खाना खाता है वहां उधार है । कमरे का किराया दो महिने से बाकी है । ऐसे में उपन्यास का वाचिका अमला उस दो हजार का चैक भेज देती है , तो अमर उसे स्वीकार नहीं करता है- " मैं दो दो रुपये के लिए जरुर झगडता हूं , और जहां अपना अधिकार समझता हूं वहां प्रकाशकों से पत्रिकाओं से पांच - पांच रुपयों के लिए अपने सम्बन्ध बिगाड लेता है । अगर ज्यादा व्यवहारिक बनूं तो शायद इन पांच के बदले सौ काम निकाल सकता हूं । लेकिन मैं चहता हूं, लेखन भी एक आत्मसम्मानजनक पेशा हो उलके परिश्रम के बदले भी उसी तरह कीमत मिले जैसे हाथीदांत पर नक्काशी करने वाले को मिले...हम क्या करें जो न सिद्ध है न संत केवल लेखक बनकर आत्मसम्मान की जिंदगी जीना चाहते है ।

अपने नाम पर आये दो हजार का चैक वापस भेजना और आत्मसम्मान की बात करना हर किसी के लिए संभव नहीं है । कुछ लोग ऐसे भी होते है , जो लोगों को आदर्श और नैतिकता का उपदेश तो देते हैं और खुद उसे अमल में लाने से कतराते हैं यह अर्थ - प्रधान व्यवस्था उन्हें कहीं पंगु बना देती है । शह और मात का उदय इसी सच्चाई रोशनी डालते हुए कहता है लेकिन मुझे तो एक भी लेखक नहीं दिखता जो केवल अपने मन का लिखकर मध्यवर्गीय नागरिक के ढंग से रह रहा हो । अपने वास्तविक कंट्रीब्यूशन को सभी स्थगित करते चले जाते हैं और वह करते हैं , जिसे मजबूरी को मजबूरी कहा गया है । कोई अनुवाद करता है तो कोई संपादन कोई टेकस्टबुक में लगा है तो कोई किसी प्रेस का प्रूफरीडर । कोई साहब किसी नेता के लिए भाषण लिखकर दे रहे है , तो कोई दूसरे नाम से जासूसी और पोंडी साहित्य की रचना कर रहें है ।

इससे यही ध्वनित होता है कि मध्यवर्गीय परिवार के लिए पूरे महिनेभर काम करने के बाद मिलनेवाली आमदनी ही उनकी आय का आधार है । एक और बढती हुई मंहगाई , दूलरी और निश्चित अनिश्चित रूप में आनेवाले घर के खर्चे गृहस्थ की कमर को ही तोड़ देते है । ऐसे में महिने के वेतन या पेन्शन से घर चलना मुश्किल हो जाता है । उपर से यह वर्ग महत्वाकांक्षी वर्ग है चद्दर से भी लंबा पैर पसारने के कारण आर्थिक संकट से झूझने की नौबत आ जाती है । आर्थिक संकट अकसर मानवीय सम्बन्धों का गला घोंट देता है । अर्थ ही सर्वोपरी हो जाता है । उसके सामने आत्मसम्मान लंगडाने लगता है । कमानेवाले की बहुत ही कद्र होती है । न कमानेवाला तथा उसपर निर्भर व्यक्ति की स्थिति उस घर में नारकीय बन जाती हा राजेन्द्र यादव ने इन सारी स्थितियों का विस्तृत निरुपण अपने उपन्यासों में किया है ।

संदर्भ सूची - :

1. डॉ. राधा कृष्णन मुखर्जी – दी Frontiers सोसल साइंस – पृष्ठ सं. – 22-23
2. राजेन्द्र यादव – 'अनदेखे अनजाने पुल' – पृष्ठ सं. – 25
3. गीता : 2 / 47
4. डॉ. लक्ष्मी लाल वैरागी – राजेन्द्र यादव का उपन्यास साहित्य – पृष्ठ सं. – 108
5. राजेन्द्र यादव – 'उखडे हुए लोग' पृष्ठ सं. – 225-226
6. डॉ. लक्ष्मीलाल वैरागी – राजेन्द्र यादव का उपन्यास साहित्य पृष्ठ सं. – 124
7. डॉ. लक्ष्मीलाल वैरागी – राजेन्द्र यादव का उपन्यास साहित्य पृष्ठ सं. – 135
8. राजेन्द्र यादव – 'सारा आकाश' पृष्ठ सं. - 176
9. वही - पृष्ठ सं. – 170
10. राजेन्द्र यादव : हैडटेल – 'उखडे हुए लोग' पृष्ठ सं. – 21
11. वही - पृष्ठ सं. – 24
12. डॉ. राधा गिरधारी – राजेन्द्र यादव के उपन्यासो मे व्यक्ति और समाज - पृष्ठ सं. – 98

13. डॉ. राधा कमल मुखर्जी – The Dimensions of Values पृष्ठ सं. – 9
14. डॉ. राधा गिरधारी – राजेन्द्र यादव के उपन्यासो मे व्यक्ति और समाज - पृष्ठ सं. – 133
15. डॉ. राधा गिरधारी – राजेन्द्र यादव के उपन्यासो मे व्यक्ति और समाज - पृष्ठ सं.- 118
16. राजेन्द्र यादव – 'उखडे हुए लोग' – पृष्ठ संख्या – 296
17. घनश्याम मधुप – हिन्दी लघु उपन्यास - पृष्ठ सं. – 115
18. डॉ. राधा गिरधारी – राजेन्द्र यादव के उपन्यासो मे व्यक्ति और समाज - पृष्ठ सं. – 96
19. Raymond Aron - lbid पृष्ठ सं. – 152

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com